डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

निष्ठा

"वह भाग गया। पकड़ो उसे।", अधीक्षक दौड़ते हुए चिल्लाया। बहुत दिनों से कोशिश कर रहा वह पागल आखिरकार आज स्वतंत्रता दिवस के दिन मौक़ा ताड़ कर वह मेंटल हस्पताल से भाग निकला।
अधीक्षक की आवाज़ सुनकर सुरक्षाकर्मी उस पागल के पीछे भागे। कुछ दौड़ते हुए गए तो कुछ गाड़ी में।
लेकिन सारी कोशिशों के बावजूद भी, वह पागल पता नहीं कैसे छिपते-छिपाते उनकी नजरों से ओझल हो जाता।
एक सुरक्षाकर्मी ने उस पागल को कुछ दूर खड़े देखा, जिसके बाद उस सुरक्षाकर्मी ने बिना देर किये अपने साथियों को इशारा किया।
वे सब के सब पूरी ताकत से दौड़े, लेकिन लग रहा था कि वह फिर भाग निकलेगा।
लेकिन ऐसा हुआ नहीं, उन्हें देख कर भी वह पागल वहीं रुका रहा और कमर की तरफ दोनों हाथ सीधे कर सीना तान खड़ा था।
कुछ क्षणों में सुरक्षाकर्मी दौड़ते हुए उसके पास पहुंचे। वह वैसे ही खड़ा रहा - चुपचाप।
सुरक्षाकर्मियों ने उसे पकड़ लिया। कुछ क्षणों तक उसने भी प्रतिकार नहीं किया और तब तक उसे ढंग से पकड़ कर बाँध लिया गया।
उसे गाड़ी में चढ़ाते वक्त एक सुरक्षाकर्मी कह रहा था, "अच्छा हुआ कि राष्ट्रगान चल गया और यह पागल पकड़ा गया।"
दूसरा सुरक्षाकर्मी भी हँसते हुए कहने लगा, "पूरा पागल है, जो रुक गया।"

डॉ० दलजीत कौर

धर्म

वह मिला तो अपने मित्र की बात करने लगा - बहुत धार्मिक है वह ।

पर उसका मन काला है - मैंने कहा ।

बहुत पाठ करता है वह सारा दिन -वह फिर बोला।

पर वह अपने भाई का हिस्सा खा गया - मैंने जवाब दिया ।

उसकी पत्नी हमेशा पाठ करती है ।उनके घर मिलने जाओ तो भी नहीं मिलती ।बस ! ईश्वर भक्ति में लीन रहती है -उसने सफ़ाई दी ।

-मुझे पता है कि उसने कितनी कन्या -भ्रूण हत्याएँ की हैं ।

जब भी मिलता है तो वह भगवान ,
भक्ति ,सच ,गुरूओ की बात करता है -उसने दलील दी ।

मैंने प्रश्न किया -धर्म क्या पाप धोने का ही काम करता है ?

उसके पास कोई जवाब नहीं था ।